II. समस्याओं/चुनौतियों को दूर करने में अध्यापक की भूमिका :-
(The Role of the teacher to remove the above challenges)

(1) आधुनिकतम ज्ञान एवं तैयारी :-
(Updodate knowledge and preparation)

आधुनिकतम ज्ञान एवं तैयारी का अभाव कई प्रकार की शैक्षिक समस्याओं को जन्म देता है। अध्यापक को स्वाध्याय द्वारा, गोष्ठी, सम्मेलनों, कार्यशालाओं, गोष्ठियों तथा नवीकरण कोर्सों में भाग लेकर अपने ज्ञान को आधुनिकतम बनाये रखना चाहिए।

(2) व्यवहार एवं व्यक्तित्व को सुधारना :-
(Improving Behaviour and Personality)

कक्षीय समस्याओं

Scanned with CamScanner

(4)

कुंठित करता, उसमें पूर्व मनोरोग एवं अन्तर्मुखी प्रवृत्ति को उत्पन्न करता तथा उसके अधिकारपूर्ण, अनुशासनपूर्ण एवं पक्षपातपूर्ण व्यवहार के साथ होता है, अध्यापक को अपने मनोरोग एवं मानसिक स्वास्थ्य सुधारना चाहिए। उसे सहयोगात्मक, मनोवैज्ञानिक, विश्वस्त, प्रसन्नतापूर्ण एवं स्नेहपूर्ण दृष्टिकोण रखना चाहिए।

(3) विचार-विमर्श (Discussion) :- अपने सहकर्मियों तथा विशेषज्ञों के साथ स्पष्ट एवं स्वतन्त्र विचार-विमर्श अध्यापक की शैक्षिक समस्याओं के समाधान में सहायता प्रदान कर सकता है। अन्य अध्यापकों से विचार-विमर्श करने से उसे पता चलेगा कि वे इन समस्याओं का समाधान कैसे करते हैं। विद्यार्थियों की अध्यापक की आलोचना नहीं करनी चाहिए बल्कि उसे उसकी सहायता तथा उसको प्रोत्साहन एवं निर्देशन प्रदान करना चाहिए।

(4) आत्म-विश्लेषण (Self-analysis) :-

अध्यापक को आत्म-विश्लेषण करना चाहिए। उसे अपना मूल्यांकन स्वयं करना चाहिए। इसके लिए आत्म-विवरण (Introspection) की विधि उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इस विधि से वह अपने व्यवहार की त्रुटियों को समझ सकता है और उसमें सुधार कर सकता है।

(5) वैयक्तिक उपचार (Personal Therapy) :-

यदि अध्यापक के लिए यह आवश्यक [illegible] तो [illegible]

को इन्हें पढ़ने [illegible] कारण बोझ देगी उसे व्यक्तिगत उपचार की आवश्यकता है इसलिए उसे किसी मनोचिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

⑤ विद्यार्थियों द्वारा मूल्यांकन (Evaluation by pupils):-

अध्यापक को समय-समय पर अपने काम का शिक्षण कार्य का मूल्यांकन [illegible] चाहिए। उसे विद्यार्थी-अध्यापक के सम्बन्ध, पाठ्यक्रम के अनुभव एवं सामूहिक जीवन पर विद्यार्थियों के विचार जानने चाहिए।

⑥ विद्यार्थियों के साथ संबंध सुधारना:-
(Improving relations with pupils):- अध्यापक को विद्यार्थियों के साथ स्वस्थ सम्बन्ध रखने चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित गुण उपयोगी सिद्ध हो सकती है:-
(i) भलाई में रुचि लेना (Interested in welfare)
(ii) सहानुभूति एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार अपनाना (Sympathetic and affectionate attitude)
(iii) विद्यार्थियों को जानना (To know the pupils)
(iv) विद्यार्थियों का आदर करना (Respecting the pupil)
(v) वैयक्तिक ध्यान रखना (To keep individual attention)
(vi) [illegible] व्यवहार करना [illegible] (Hugs)

Scanned with CamScanner



(vii) विद्यार्थियों को प्रेरित करना (Inspiring the pupil)

⑧ प्रभावशाली पाठ्यक्रम (Impressive Syllabus):-
पाठ्यक्रम अत्यधिक और कठिन नहीं होना चाहिए। वह विद्यार्थी के रुचियों, समुदाय की आवश्यकता, विद्यालय की सीमाओं, [illegible], सामंजस्य, उपयोगिता, रचनात्मक तथा सरलता के सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए।

⑨ मनोवैज्ञानिक समय-सारणी (Psychological time-table)
दोषपूर्ण समय-सारणी के कारण कई समस्याओं का जन्म होता है समय-सारणी ऐसे मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित होनी चाहिए- जैसे-विषय का महत्व समझने की कोशिश करना, विषय की कठिनाई-स्तर पर ध्यान देना, समय-सारणी सरल एवं लचीला हो। विविधता की कसौटी को समझना, आदि।

(10) ब्लैक बोर्ड की समस्याओं का समाधान :-

(Solving black-board problems) :- प्रत्येक कक्षा में ब्लैक-बोर्ड, डस्टर और चाक की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। ब्लैक-बोर्ड लेख साफ-सुथरा, सशक्त, स्पष्ट और विधिवत होना चाहिए। अध्यापक को ऐसा लिखना चाहिए कि पीछे की पंक्ति के विद्यार्थी समझ सकें। अध्यापक को लिखते समय पढ़ते भी जाना चाहिए। उसे कभी-कभी कक्षा की ओर भी देख लेना चाहिए ताकि विद्यार्थी अनुशासन में रहें।

(11) विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण (Pupil centred teaching) :-

Scanned with CamScanner



शिक्षण छात्रों के लिए होता है, छात्र शिक्षण के लिए नहीं होते। (Teaching is meant for the pupils and pupils are not meant for teaching.)
अध्यापक को विद्यार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नताएँ समझते हुए शिक्षण कार्य करना चाहिए।

(12) शिक्षण सूत्रों एवं सिद्धान्तों का प्रयोग :-
(Use of maxims and principles of teaching)
अध्यापक को विविध शिक्षण सूत्रों का प्रभावशाली प्रयोग करना चाहिए जैसे ज्ञात से अज्ञात की ओर (Proceed from known to unknown), सरल से कठिन की ओर (Simple to complex), स्थूल से अमूर्त की ओर (Concrete to abstract), मनोवैज्ञानिक से तार्किक की ओर (Psychological to logical) आदि।

(13) श्रव्य-दृश्य सहायक साधनों का प्रयोग :
(Use of audio-visual aids) :- अध्यापक को चाहिए जैसे मानचित्र, ग्लोब, चार्ट, रेखा चित्र, ब्लैक-बोर्ड, ओवरहेड बोर्ड, पोस्टर, कार्टून, फिल्म-पट्टियाँ, आकाशवाणी, दूरदर्शन, रिकार्डिंग आदि।

(14) आधुनिक शिक्षण-विधियों का प्रयोग (Use of devices of teaching) :- अध्यापक को आधुनिक शिक्षण विधियों (जैसे प्रभावशाली) प्रयोग करना चाहिए।